पुस्तक समीक्षा

पुस्तक– दर्द के चौराहे
लेखक– डॉ0 प्रेम शंकर द्विवेदी 'भास्कर'
प्रकाशक–अमित प्रकाशन गाजियाबाद
मूल्य–साठ रुपये मात्र
पृष्ठ संख्या–119
मो0–9450086287

'दर्द के चौराहे' डॉ0 प्रेम शंकर द्विवेदी 'भास्कर' द्वारा रचित एक सामाजिक उपन्यास है। इस उपन्यास की कथा प्राचीन भारतीय मूल्यों एंव पूर्ववर्ती समाज में व्याप्त विद्रूपताओं के आस–पास घूमती हुई दीख पड़ती है। इसमें ग्रामीणांचल की लोक संस्कृति एवं पारस्परिक मानसिक टकराव स्पष्ट दिखायी देता है। लेखक ने यह स्वीकार किया है कि प्रत्येक युग की सत्ता प्रकृति प्रधान रही है। ''प्रतिदिन मजदूरी करके जीवन वृत्ति चलाने वाले मजदूरों के घर चूल्हा जलाने के लिए वाह्य कृपा की आवश्यकता थी। अन्यथा भूख की ज्वाला लिए हुए ही इस दैवी प्रकोप का सामना करना पड़ रहा था।[1]

उपर्युक्त पक्तियों में रचनाकार ने प्राचीन ग्रामीण समाज की व्यवस्था और उस व्यवस्था के संकीर्णता में जीवनयापन करने वाले गरीब दैन्य जीवन जीने वाले, वाह्य वृत्ति पर निर्भर किसानों एवं मजदूरों का यथार्थ चित्रण करते हुए यह बताना चाहा है कि– ''प्रकृति भी बड़े लोगों की वृद्धि तथा गरीबों की श्रीहीनता में सहयोग करती है। शायद इसीलिए हवा अंगारें को दहलाती और क्षीणकाय दीपक को बुझा देती है।''[2] उपन्यास की उपरोक्त पंक्तियों में लेखक ने प्रतीक के माध्यम से ''अंगारे और दीपक का अलौकिक उदाहरण प्रस्तुत करते हुए ''गागर में सागर'' भरने जैसी उक्ति को चरितार्थ किया है। वर्तमान नारी– मूल्यों की तूलिका पर यदि इस उपन्यास की नारी पात्र शिल्पा माधुरी, शान्ति को रख कर देखे तो ज्ञात होता है कि नारी के प्रति लेखकीय विचारधारा में कोई विशेष परिवर्तन नहीं है। यहाँ तो यह स्वीकार करना ही होगा कि भास्कर की भाषा एवं वाद–संवाद योजन तथा कथासामंजस्य योजना में मुन्शी प्रेमचन्द्र का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता दीख पड़ता है। शान्ती–''कौन मुआ कहता है कि हमने सूद पर पैसे चलाये हैं।

इस उपन्यास की नायिका माधुरी संघर्षशील महिला है। वह पुरूष प्रधान समाज को यह बताना चाहती है कि अब वो दिन उठ गये जब पुरूष पत्नी को चरण–दासी मानता था। एक प्रसंग में माधुरी– पति शान्ताराम से कहती है– ''देखिए, हम नारियों का भी पुरूष के समान अधिकार है। अब वे पुरूष की मात्र रखैल बनकर नहीं रह सकेंगी।'' नारी जनजागरण, का जो चित्र उपन्यासकार ने प्रस्तुत किया है वह वर्तमान नारी स्वातन्त्रय तथा आधुनिकता वादी यथार्थ का दस्तावेज है। मनुष्य की स्वार्थ पूर्ण मानसिकता का खुलेमन से विरोध प्रस्तुत करना उपन्यास को उत्कृष्ट रूप प्रदान करता है।

Scanned with CamScanner

इस उपन्यास का नायक अनुप, सरल धीर–गम्भीर स्वभाव का है। उसका पिता दूसरा विवाह शान्ती नामक महिला से करता है। जो निःसन्तान थी, और नहीं चाहती थी कि पति की कमाई का उपयोग परिवार के अन्य लोग करें। वह पति–परायण से अधिक धन परायण थी। शान्ती स्वयं तो खा लेती लेकिन रोग ग्रस्त पति को कई–कई दिनों भूखा ही रखती थी उपन्यास के एक अंश में खेत से शान्ती कुछ आलू और मटर की फॅलियाँ तोड़ लायी। उसे तल कर हलक के नीचे उतार गयी चैतू की चर्खी से एक लोटा गन्ने का रस लाकर पी गयी। बेचारे रामदीन का भूख से बुरा हाल था उसका पेट और पीठ एक से हो गये थे।

उपन्यास 'दर्द के चौराहे' का कथानक अपनी मूलभूत समस्याओं के उद्घाटन में यथार्थ का जामा पहने दिखायी पड़ती है। उपजीविका हेतु उपन्यास के 'नायक' और 'सह–नायक' अनूप और महेश दोनों महानगरों में अवश्य जाते हैं किन्तु उन्हें आधुनिक शहरीकरण से उतना प्रेम नहीं जितना गाँव से है। शहरों में रहने वाली लड़कियाँ और उनके माँ बाप गाँव के लड़के से वैवाहिक सम्बन्ध जोड़ना हेय मानते है। लेखक का यह प्रयोग प्रेमचन्द्र से हट कर नवीनता की यथार्थ पृष्ठभूमि पर वास्तविकता का जामा पहने दीख पड़ता है। इस उपन्यास में अनेक नयी ऐसी समस्याओं को प्रस्तुत करने का प्रयास हुआ है जो अब तक विल्कुल अछूती थी।

दस्यु उन्मूलन, सामाजिक परिवर्तन, अस्पृश्यता आदि वृत्तों का यथार्थ चित्रण उपन्यास के मूल में जीव्यमान द्रव्टव्य होता है। भाषा विज्ञान के प्रसिद्ध लेखक डॉ0 नरेश शर्मा ने इस उपन्यास की प्रकाशकीय समीक्षा में लिखा है कि ''संवेदनशीलता इस उपन्यास का मूल उपजीव्य है, कथा संगठन, जीवन की सहज त्रासदियों को निरूपित करने में सफल है। भाषा में स्थानीय रंग ने सहजता को प्रतिच्छायित करने में सफल योगदान किया है। मानवीय दृष्टिकोण को प्रतिष्ठापित करने के साथ–साथ सामाजिक कूरता और कुरूपता को रेखांकित कर उपन्यासकार ने मानव स्वभाव के विलोम पक्ष को प्रस्तुत करके इसे आदर्श निरूपण के साथ ही यथार्थ की निष्ठुर पृष्ठ भूमि पर अवस्थित करके अपनी श्रेष्ठ रचनाधर्मिता को उजागर किया है।

उपन्यास की भाषा सहज, सरल प्रवाहशील और व्यवहारिक है। परिस्थितयों का ग्रामीण परिवेश होने से बोल चाल में ठेठ– अवधी मिश्रित खड़ी बोली भी दिखायी पड़ती है। लोकोक्तियों एवं मुहाविरों का प्रयोग अधिक दिखायी देता है।

विचार और भाव दोनों ही दृष्टियों से कथ्य और शिल्प अत्यन्त सरल तथा प्रवाह पूर्ण हैं औपन्यासिक मापदण्ड पर समीक्षा करने से यहाँ यह कहना अलम् न होगा कि डॉ0 प्रेम शंकर द्विवेदी भास्कर की यह उपन्यास कृति सफल और विविध मनोवैज्ञानिक वृत्तों से परिपूर्ण है।

समीक्षक
डॉ0 जनार्दन प्रसाद पाण्डेय मणि''
(संस्कृत विभाग) रा0सं0सं0 इलाहाबाद।

Scanned with CamScanner